हिन्दी सम्मेलन के लिए राजदूत का भाषण

Professor Kayako Hayashi, Hon'ble President of Tokyo University of Foreign Studies.
प्रोफेसर कायाको हयाशी, अध्यक्ष टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज

Shri Ravindra Jaiswal, Joint Secretary (RBB) Ministry of External Affairs, Government of India
श्री रवीन्द्र जयसवाल, संयुक्त सचिव (आरबीबी), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

Shri Mayank Joshi, Deputy Chief of Mission
श्री मयंक जोशी, मिशन के उप प्रमुख

Professor Tomio Mizokami, Professor Emeritus, Osaka University
प्रोफेसर टोमियो मिज़ोकामी, प्रोफेसर एमेरिटस, ओसाका विश्वविद्यालय

Professor Yoshifumi Mizuno, Head of Hindi Department, Tokyo University of Foreign Studies
प्रोफेसर योशिफ़ुमी मिज़ुनो, हिंदी विभाग के प्रमुख, टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज़

Distinguished Hindi Scholars from Japan, India and other countries
जापान, भारत और अन्य देशों के प्रतिष्ठित हिंदी विद्वान

My colleagues at the Embassy
दूतावास में मेरे सहकर्मी

Distinguished guests
विशिष्ट अतिथिगण,

Dear Friends and my dear students
मित्रों एवं प्रिय विद्यार्थियों

सबसे पहले, मैं इस महत्वपूर्ण अवसर पर दूतावास में आप सभी का स्वागत करना चाहता हूं।

विदेश मंत्रालय और टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज द्वारा आयोजित इस अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन "दक्षिण पूर्व एशिया में हिंदी की स्थिति - एक संगोष्ठी" में बोलते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है।

इसमें शामिल सभी लोगों के अथक प्रयासों से यह सम्मेलन आकार ले सका है। इसमें विदेश मंत्रालय, जापान में भारतीय दूतावास और विशेष रूप से टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज शामिल हैं। यह तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित करने में भारतीय दूतावास, टोक्यो और टोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज (टीयूएफएस) के प्रयास जापान और दक्षिण पूर्व एशिया में हिंदी को लोकप्रिय बनाने की दिशा में एक सराहनीय कदम है।

मैं इस अवसर पर उन सभी की सराहना और धन्यवाद करता हूं जिन्होंने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए दिन-रात काम किया।

हिंदी एक इंडो-आर्यन भाषा है जिसे दुनिया भर के लगभग 425 मिलियन लोग अपनी पहली भाषा के रूप में बोलते हैं और 120 मिलियन लोग इसे अपनी दूसरी भाषा के रूप में बोलते हैं। , जिससे यह दुनिया में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई। यह भारत की समृद्ध विविधता का प्रतीक है और भारत को आत्मीयता और भावना से जोड़ने में अभिन्न भूमिका निभाता है। उम्मीद है कि वर्ष 2050 तक हिंदी दुनिया की सबसे सशक्त भाषाओं में से एक होगी और युवाओं के बीच इसकी बढ़ती लोकप्रियता एक उज्ज्वल भविष्य प्रस्तुत करती है।

हिंदी भाषा राष्ट्रीय एकता और सद्भाव के सूत्र को मजबूत करती है और भारतीय ज्ञान और संस्कृति के संचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसे-जैसे भारत की अंतर्राष्ट्रीय प्रोफ़ाइल बढ़ेगी, हिंदी भाषा भी अंतर्राष्ट्रीय चर्चा में अधिक दृश्यता प्राप्त करेगी।

भारत और जापान "विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी (Special Strategic and Global Partnership)' साझा करते हैं, जो आधुनिक समय के सबसे असरदार संबंधों में से एक के रूप में उभर रहा है। जैसे-जैसे भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रतिष्ठा हासिल कर रहा है, विभिन्न आयोजनों और संगोष्ठियों के माध्यम से विश्व स्तर पर हिंदी की लोकप्रियता का महत्व और दृश्यता बढ़ गई है।

मुझे विश्वास है कि जापान में इस अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के आयोजन से हिंदी भाषा को बढ़ावा मिलेगा और अधिक से अधिक जापानी लोग हिंदी भाषा को अपनाएंगे।

मैं एक बार फिर आयोजकों के प्रति अपनी सराहना व्यक्त करता हूं और उनके प्रयासों की सराहना करता हूं। मैं विशेष रूप से टीयूएफएस के प्रोफेसर मिज़ुनो, प्रोफेसर क्योसुके अडाची और प्रोफेसर सूरज प्रकाश के नामों का उल्लेख करना चाहूंगा, जिन्होंने इस सम्मेलन को इसके भौतिक स्वरूप में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंत में, मैं अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन, "दक्षिण पूर्व एशिया में हिंदी की स्थिति- एक संगोष्ठी" के औपचारिक उद्घाटन की घोषणा करता हूँ।

धन्यवाद और नमस्कार